INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 8 | SEPTEMBER - 2021

"भारत के आर्थिक विकास में बैंकों का अध्ययन"

डॉ.देवेन्द्र सिंह बागरी[1],डॉ.चन्द्रकला अरमोती[2]
[1]सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष ,शासकीय तुलसी महाविद्यालय अनूपपुर.
[2]सहायक प्राध्यापक, रानी दुर्गावती शा.स्नातकोत्तर महा.वि.मण्डला.

परिचय – Introduction :-

बैंक (Bank) उस वित्तीय संस्था को कहते हैं जो जनता से धनराशि जमा करने तथा जनता को ऋण देने का काम करता है। लोग अपनी अपनी बचत राशि को सुरक्षा की दृष्टि से अथवा ब्याज कमाने के हेतु इन संस्थाओं में जमा करते और आवश्यकतानुसार समय समय पर निकालते रहते हैं। बैंक इस प्रकार जमा से प्राप्त राशि को व्यापारियों एवं व्यवसायियों को ऋण देकर ब्याज कमाते हैं। आर्थिक आयोजन के वर्तमान युग में कृषि, उद्योग एवं व्यापार के विकास के लिए बैंक एवं बैंकिंग व्यवस्था एक अनिवार्य आवश्यकता मानी जाती है।

राशि जमा रखने तथा ऋण प्रदान करने के अतिरिक्त बैंक अन्य काम भी करते हैं जैसे, सुरक्षा के लिए लोगों से उनके आभूषणादि बहुमूल्य वस्तुएँ जमा रखना, अपने ग्राहकों के लिए उनके चेकों का संग्रहण करना, व्यापारिक बिलों की कटौती करना, एजेंसी का काम करना, गुप्त रीति से ग्राहकों की आर्थिक स्थिति की जानकारी लेना देना। अतः बैंक केवल मुद्रा का लेन देन ही नहीं करते वरन् साख का व्यवहार भी करते हैं। इसीलिए बैंक को साख का सृजनकर्ता भी कहा जाता है। बैंक देश की बिखरी और निठल्ली संपत्ति को केंद्रित करके देश में उत्पादन के कार्यो में लगाते हैं जिससे पूँजी निर्माण को प्रोत्साहन मिलता है और उत्पादन की प्रगति में सहायता मिलती है।

बैंक एक वित्तीय संस्थान है जो जमा, उधार को स्वीकार करने जैसे कई कार्य करता है ऋण, कृषि और ग्रामीण विकास आदि में बैंक आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं देश में लोगों को बैंकों के साथ अपने अधिशेष धन जमा करने के लिए प्रोत्साहित करना आवश्यक है इन धनराशि का उपयोग उद्योगों को ऋण प्रदान करने के लिए किया जाता है। वित्तीय बाजार में बैंक की आवश्यक भूमिका उन लोगों को जोड़ना है जिनके पास पूंजी है उन लोगों के साथ जो पूंजी चाहते हैं। आर्थिक–उदारीकरण और वैश्वीकरण के बाद, एक बैंकिंग उद्योग पर महत्वपूर्ण प्रभाव है। भारत में बैंकिंग की उत्पत्ति 18 वीं शताब्दी में हुई थी। सबसे पुराना भारत में बैंक ऑफ इंडिया, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, 1806 में सरकारी स्वामित्व वाला बैंक है। SBI सबसे बड़ा है देश में वाणिज्यिक बैंक। स्वतंत्रता के बाद, भारतीय रिजर्व बैंक का राष्ट्रीयकरण किया गया और व्यापक शक्तियां है। वर्तमान में, भारत में 96 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक, 27 सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, 31 हैं निजी बैंक और 38 विदेशी बैंक। आज, बैंकों ने अपनी गतिविधियों में विविधता ला दी है और इसमें शामिल हो रहे हैं नए उत्पादों और सेवाओं में क्रेडिट कार्ड, उपभोक्ता वित्त, धन के अवसर शामिल हैं प्रबंधन, जीवन और सामान्य बीमा, निवेश बैंकिंग, म्यूचुअल फंड, पेंशन फंड विनियमन, स्टाक बैंकिंग सेवाओं, आदि, अग्रणी भारतीय बैंकों में से अधिकांश वैश्विक जा रहे हैं, कार्यालय स्थापित कर रहे हैं विदेशों में, स्वयं या अपनी सहायक कंपनियों के माध्यम से।

साहित्य की समीक्षा : –

बैंक किसी भी देश के सबसे महत्वपूर्ण हिस्सों में से एक हैं, बेहतर समन्वय तंत्र एवं राज्य के विकास और राजनीतिक दृष्टिकोण के अनुसार बैंकिंग में भागीदारी, एक सरकार बैंकों के प्रत्यक्ष स्वामित्व या प्रतिबंधों के माध्यम से होती है यह सुनिश्चित करने के लिए कि बैंकिंग क्षेत्र अपना प्रदर्शन करता है, अकेले बैंकों के संचालन से बेहतर बैंकों का संचालन कार्य करता है। यह तर्क जरूरी है कि सरकार इसके लिए बेहतर आर्थिक परिणाम सुनिश्चित कर सकती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में एक शाखा अवसंरचना जो कि निजी बैंकों को अधिकतम लाभान्वित करने से नहीं होगी। इस प्रकार सरकार की सक्रिय भागीदारी बैंकिंग क्षेत्र के बेहतर कामकाज को सुनिश्चित करती है।

वर्तमान अध्ययन के उद्देश्य :–

1. Study अध्ययन का केंद्रीय उद्देश्य पूंजी में भारतीय बैंकों की भूमिका की अनुभवजन्य जांच करना है।
2. गठन और आर्थिक विकास।
3. Economic पूंजी निर्माण और आर्थिक विकास पर बैंकों की जमा गतिशीलता के प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए।
4. Association भारत में पूंजी निर्माण और आर्थिक विकास के बीच विद्यमान सहयोग को निर्धारित करना।
5. देश के विकास में बैंकों की भूमिका।
6. बैंक किसी भी देश के सबसे महत्वपूर्ण हिस्सों में से एक हैं इस आधुनिक समय में पैसा और उसकी आवश्यकता बहुत महत्वपूर्ण है।

7. देश की एक विकसित वित्तीय प्रणाली विकास प्राप्त करना सुनिश्चित करती है आधुनिक बैंक किसी देश को मूल्यवान सेवाएं प्रदान करता है विकास प्राप्त करने के लिए एक अच्छा होना चाहिए न केवल आर्थिक बल्कि समाज का समर्थन करने के लिए वित्तीय प्रणाली विकसित की तो, एक आधुनिक बैंक देश के सामाजिक–आर्थिक मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, बैंकों की कुछ महत्वपूर्ण भूमिकाएँ किसी देश का विकास संक्षेप में नीचे दिखाया जा रहा हैः–

1. लोगों की बचत की आदतों को बढ़ावा देना। Promoting people's saving habits :- बैंक आकर्षक जमा योजनाओं को शुरू करने और पुरस्कार या वापसी प्रदान करके जमाकर्ताओं को आकर्षित करता है ब्याज के रूप में। बैंक अपने ग्राहकों को विभिन्न प्रकार की जमा योजनाएं प्रदान करते हैं।
2. पूंजी निर्माण और उद्योग को बढ़ावा देना। Capital formation and promotion of industry :- पूंजी किसी भी व्यवसाय या उद्योग के सबसे महत्वपूर्ण हिस्सों में से एक है। यह व्यवसाय का जीवन रक्त है। बैंक जमाकर्ताओं से जमा राशि जमा करके पूंजी निर्माण को बढ़ा रहे हैं और इन जमाओं को रूपांतरित करते हैं।
3. व्यापार और वाणिज्य कार्यों का चौरसाई करना Smoothing trade and commerce operations :- इस आधुनिक युग में व्यापार और वाणिज्य किसी भी देश के बीच महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, पैसा लेन–देन उपयोगकर्ता के अनुकूल होना चाहिए एक आधुनिक बैंक अपने ग्राहकों को कहीं भी धन भेजने में मदद करता है और दुनिया से कहीं से भी धन प्राप्त करते हैं। एक अच्छी तरह से विकसित बैंकिंग प्रणाली विभिन्न आकर्षक प्रदान करती है जैसे, मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड आदि जैसी सेवाएं इस प्रकार की सेवाएं तेजी से देती हैं और लेनदेन को सुविधा जनक बनाती है, इसलिए बैंक व्यापार और वाणिज्य को विकसित करने में मदद करता है।
4. रोजगार के अवसर पैदा करना। Generate employment :- चूंकि एक बैंक उद्योग और निवेश को बढ़ावा देता है, इसलिए स्वचालित रूप से रोजगार उत्पन्न होता है अक्सर इस लिए एक बैंक रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए एक अर्थव्यवस्था को सक्षम बनाता है।
5. कृषि विकास का समर्थन करें। Support agricultural development :- कृषि क्षेत्र किसी भी अर्थव्यवस्था का अभिन्न अंग है। खाद्य आत्मनिर्भरता प्रमुख है किसी भी देश की चुनौती

और लक्ष्य। आधुनिक बैंक ऋण प्रदान करके कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देते हैं और अन्य ऋणों और अग्रिम योजनाओं की तुलना में कम ब्याज दर के साथ अग्रिम।

6. मौद्रिक नीति लागू करना Implementation of monetary policy :- मौद्रिक नीति किसी भी सरकार की एक महत्वपूर्ण नीति है। मौद्रिक नीति का प्रमुख उद्देश्य है मुद्रास्फीति, अपस्फीति, संकट आदि से देश की वित्तीय प्रणाली को स्थिर करना।
7. संतुलित विकास Balanced development :-आधुनिक बैंक दुनिया भर में अपना अभियान फैला रहे हैं। हम बड़े बैंकों की संख्या देख सकते हैं जैसे सिटी बैंक, बड़ौदा बैंक आदि यह देश को ग्रामीण और अर्ध शहरी क्षेत्रों में बैंकिंग गतिविधियों को फैलाने में मदद करता है क्षेत्रों। देश भर में बैंकिंग कार्यो के प्रसार के साथ, संतुलित प्राप्त करने में मदद करता है ग्रामीण क्षेत्रों को बढ़ावा देकर विकास। आधुनिक बैंक सामाजिक–आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है देश का एक विकसित बैंकिंग प्रणाली देश को बिना संतुलित विकास प्राप्त करने में सक्षम बनाती है।

आर्थिक विकास में वाणिज्यिक बैंकों का निर्माण Creation of commercial banks in economic development :-

- वाणिज्यिक बैंक छोटे व्यवसायों के वित्तपोषण का एक स्रोत हैं।
- आर्थिक विकास में मुख्य रूप से वित्तीय मध्यस्थों के रूप में उनकी भूमिका निभाते है।
- वाणिज्यिक बैंक पूरे बाजार में निवेश पूंजी के प्रवाह को चलाने में प्रमुख मदद करते हैं।
- अर्थव्यवस्था में इस पूंजी आवंटन का तंत्र ऋण देने की प्रक्रिया से होता है जो मदद करता है।
- वाणिज्यिक बैंक वित्तीय जोखिम का आकलन करते हैं।
- जोखिमः आर्थिक विकास में वाणिज्यिक बैंकों की सबसे महत्वपूर्ण भूमिकाओं में से एक मध्यस्थ के रूप में है, जोखिम यह मुख्य रूप से तब होता है जब बैंक व्यवसायों या व्यक्तियों को ऋण देते हैं।
- व्यक्ति बैंक से पैसे उधार लेने के लिए आवेदन करते हैं, बैंक उधारकर्ता के वित्त की जांच करता है।
- अन्य कारकों के बीच आय, क्रेडिट स्कोर और ऋण स्तर। इस विश्लेषण के परिणाम से बैंक को मदद मिलती है।
- उधारकर्ता डिफाल्ट की संभावना का आकलन कर जोखिम भरे उधारकर्ताओं को हटाकर, वाणिज्यिक बैंक कम कर देते हैं।
- बैंक को उधार देने के लिए धन, आगे आर्थिक विकास का समर्थन करता है।
- व्यक्ति जब वाणिज्यिक बैंक जोखिम का आकलन करते हैं, तो वे यह सुनिश्चित करने में मदद करते हैं कि ऋण साख पर जाते हैं उधारकर्ताओं। बदले में, उधारकर्ता आम तौर पर घरों जैसे प्रमुख खरीद को वित्त करने के लिए ऋण आय का उपयोग करते हैं।
- उन व्यक्तियों से गतिविधि जिनके पास अब अपने स्वयं के प्रयासों को वित्त करने के लिए आवश्यक धन है। लघु व्यवसायः वाणिज्यिक बैंक भी विभिन्न तरीकों से व्यापार उधार देते हैं। एक व्यवसाय का स्वामी एक छोटे व्यवसाय की शुरुआती लागतों को वित्त करने के लिए एक ऋण का अनुरोध कर सकते हैं। एक बार वित्त पोषित करने के बाद, छोटा व्यवसाय हो सकता है परिचालन शुरू करें और एक विकास योजना तैयार करें। लघु व्यवसाय गतिविधि का कुल प्रभाव उत्पन्न करता है देश भर में रोजगार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा। अमेरिकी जनगणना ब्यूरो के अनुसार, व्यवसाय 2004 में एक और 19 लोगों के बीच रोजगार 4.4 मिलियन नौकरियों के लिए था। इसके विपरीत, व्यवसायों 20 से अधिक कर्मचारियों के साथ केवल एक ही वर्ष में 1.2 मिलियन के लिए जिम्मेदार है। सरकारी खर्चः वाणिज्यिक बैंक भी एक एजेंट के रूप में संघीय सरकार की भूमिका का समर्थन करते हैं।

बैंकों का महत्व Importance of Banks :-

किसी भी राष्ट्र की अर्थ–व्यवस्था में बैंकिंग व्यवस्था का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान होता है । बैंक मुद्रा–बाजार (Money Market) के सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग के रूप में देश के आर्थिक–विकास के महत्वपूर्ण उपकरण होते हैं। पूँजी निर्माण, व्यापार, उद्योग एवं कृषि के

अर्थ–प्रबन्धन तथा देश की आर्थिक, सामाजिक नीतियों एवं कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में उनकी भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, मुद्रा एवं साख व्यवस्था की केन्द्रीय पुरी के रूप में अर्थ–व्यवस्था का कोई भी ऐसा अंग नहीं है, जो बैंकों से प्रभावित न होता हो, विकास कार्यक्रमों में बैंक की बढ्ती हुई भागीदारी ने ''विकास बैंकिंग'' (Developmental Banking) नामक नई विधा को जन्म दिया है।

बैंकों का महत्व संक्षेप में, निम्नानुसार स्पष्ट किया जा सकता है :–

(1) साख का सृजन (Creation of Credit) :–

साख आधुनिक अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार है। अधिकांश व्यावसायिक क्रियायें साख के माध्यम से ही होती है। बैंक साख का सृजन करते है वे जनता की बचतों (Savings) को ब्याज, सुरक्षा एवं अन्य सेवाओं का आकर्षण देकर जमाओं (Deposit) के रूप में प्राप्त करते हैं तथा इस प्रकार प्राप्त कोषों को ऋणों एवं अग्रिमों (Loans and Advance) के रूप में उधार देते है।

(2) पूँजी निर्माण (Capital Formation) :–

किसी भी देश का विकास पूँजी–निर्माण की दर पर निर्भर करता है। बैंक जनता की बचतों को निक्षेपों के रूप में प्राप्त कर उसे व्यावसायिक साख के रूप में उत्पादक–कार्यो में प्रवाहित करते है। जब बैंकों का चलन नहीं था, बचतों को सोने–चाँदी या आभूषणों के रूप में अथवा सिक्कों को जमीन में गाड़ कर रखा जाता था तथा जनता की बचत निष्क्रिय, असुरक्षित एवं अनुपयुक्त पडी रहती थी।

(3) साख का नियन्त्रण (Control of Credit) :–

व्यावसायिक आवश्यकताओं के लिए साख की माँग तथा उपलब्ध साख की मात्रा अथवा साख की पूर्ति के मध्य सन्तुलन होना अत्यन्त आवश्यक है अन्यथा मुद्रा के मूल्य में परिवर्तनों (मुद्रा स्फीति, विस्फीति आदि) का देश की अर्थ–व्यवस्था पर गम्भीर प्रभाव पड़ते हैं। व्यापारिक बैंक साख का सृजन करते हैं तथा देश का केन्द्रीय बैंक साख का नियन्त्रण करता है।

(4) मुद्रा प्रणाली का संचालन (Operation of Monetary System) :–

देश का केन्द्रीय बैंक पत्र–मुद्रा का निर्गमन करता है तथा केन्द्रीय सरकार के निर्देशानुसार मुद्रा–प्रणाली का संचालन भी करता है।

(5) मुद्रा प्रणाली में लोच (Elasticity of Money System) :–

व्यवसाय कई मुद्रा एवं साख सम्बन्धी आवश्यकताओं में परिवर्तन होता रहता है। अतः यह आवश्यक होता है कि देश कि मुद्रा–प्रणाली पर्याप्त लोचपूर्ण हो ताकि अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं के अनुसार उसमें परिवर्तन किए जाते रहें, बैंक साख का आवश्यकतानुसार प्रसार तथा संकुचन (Contraction) करके मुद्रा–प्रणाली में वांछनीय लोच उत्पन्न की जा सकती है।

(6) आर्थिक विकास में योगदान (Role in Economic Development) :–

देश के आर्थिक विकस में बैंक अनेक प्रकार से महत्वपूर्ण योगदान देते है, जैसे :–

- बैंक पूँजी–निर्माण की गति को बढाने में योगदान देते है।
- साख नियन्त्रण के द्वारा मूल्य–स्तर (Price Level) को नियन्त्रित किया जाकर 'स्थायित्व के साथ विकास' (Growth with Stability) के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।
- व्यापार एवं वाणिज्य को ऋण एवं अग्रिम की सुविधाएँ उपलब्ध कराके व्यवसाय के लिए आवश्यक 'जीवन–रक्त' (Life & Blood) व्यावसायिक वित्त प्रबन्धन में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।
- मर्चेण्ट–बैंकिंग (Merchant Banking) द्वारा बैंक पूंजी जुटाने में योगदान देते हैं।
- व्यापारिक बैंक समय–समय पर आर्थिक अध्ययन (Study) करके महत्वपूर्ण सूचनाएं, कड़े, प्रतिवेदन आदि प्रकाशित करते है तथा शोध–पत्र पत्रिकाएं (Journals) आदि का नियमित

प्रकाशन करते हैं जिनमें महत्वपूर्ण आर्थिक समस्याओं का विवेचन किया जाता है तथा अन्य उपयोगी सामग्री का समावेश किया जाता है ।

- विकास बैंकिंग (Development Banking) :– विकास कार्यों में बैंकों की भागीदारी अत्यन्त महत्वपूर्ण होती जा रही है, कृषि, उद्योग, व्यापार, वाणिज्य आदि के लिए संस्थागत वित्त (Institutional Finance) की व्यवस्था करने हेतु अनेक विशिष्ट बैंकों की स्थापना की गई है, जैसे, औद्योगिक विकास बैंक (IDBI), आयात–निर्यात बैंक (EXIM), कृषि एवं ग्रामीण विकास का राष्ट्रीय बैंक (NABARD), भूमि विकास बैंक (LDB), क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक (RRB), औद्योगिक पुनर्निर्माण बैंक (IRCI) लघु उद्योग विकास बैंक, आवास बैंक आदि। बैंक न केवल आर्थिक विकास में सहायता देते हैं वरन् अब वे अग्रणी–बैंक (Lead Bank) योजना जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से विकास–कार्यक्रमों की अगुआई भी कर रहे हैं।
- सामाजिक प्रतिबद्धता एवं जनोन्मुखी बैंकिंग (Social Responsibility and Public Orientation) :– आधुनिक युग में बैंकों का महत्व इस कारण से भी बहुत अधिक बढ गया है कि बैंकिंग नीतियों एवं कार्यक्रमों को देश की आर्थिक–सामाजिक प्राथमिकताओं से जोड़ दिया गया है। प्राथमिकता क्षेत्रों (कृषि, उद्योग आदि) को ऋण, गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों में सहयोग, प्रधानमंत्री जन–धन योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, दुर्घटना बीमा योजना आदि अनेक योजनाओं ने बैंकों को जन–जन में लोक प्रिय बना दिया है। इन योजनाओं के कारण बैंकिंग व्यवसाय की सामाजिक प्रतिबद्धता बढकर जनोन्मुखी हो गई है।
- सामाजिक–आर्थिक प्रगति के उत्प्रेरक (Catalytic Agent of Socio&Economic Growth) :–
  आधुनिक बैंक परम्परागत बैंकिंग सेवाओं के अतिरिक्त अन्य अनेक महत्वपूर्ण कार्य भी करते हैं। देश के आर्थिक विकास तथा सामाजिक–आर्थिक प्रगति के कार्यक्रमों में बैंकों की भागीदारी बढती जा रही है। विकास–बैंकिंग (Developmental Banking) बैंकिंग व्यवसाय का नया आयाम (Dimension) है।
  भारत में प्रमुख व्यापारिक बैंकों के राष्ट्रीयकरण के पश्चात् गरीबी उन्मूलन, स्वरोजगार योजनाओं, पिछड़े वर्ग के उत्थान कार्यक्रमों, लघु एवं कुटीर उद्योगों तथा हस्तशिल्प के विकस ग्रामीण विकास, औद्योगिक विकस, आयात–निर्यात व्यापार आदि कार्यक्रमों में व्यापारिक बैंकों की भागीदारी अत्यन्त महत्वपूर्ण हो गई है, अब व्यापारिक बैंक जमाएँ स्वीकार करके रुपया उधार देने वाले व्यावसायिक संस्थान नहीं रह गये हैं। वे अब सामाजिक आर्थिक प्रगति के महत्वपूर्ण उत्प्रेरक बन गये हैं।
- ग्राहकों को विभिन्न प्रकार की सेवाएँ (Services to Customers) :- बैंकों का महत्व इस करण से भी है कि वे अपने ग्राहकों को अनेकों–उपयोगी सेवाएं–उपलब्ध कराते हैं जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण निम्नलिखित हैं :–
- ग्राहकों के लिए चैक, विपत्रों आदि का संग्रहण (Collection of Cheques] Bills etc-)
- ग्राहकों के द्वारा लिखे गये चैकों का भुगतान तथा उनके देय–बिलों का भुगतान।
- एक स्थान से दूसरे स्थान को धन के हस्तान्तरण (Remittance) की सुविधाएँ।
- अंशों एवं ऋण–पत्रों तथा अन्य प्रतिभूतियों का क्रय–विक्रय।
- प्रतिभूतियों का अभिगोपन।
- प्रन्यासी, निष्पादक आदि के रूप में कार्य करना।
- ग्राहकों के स्थाई निर्देशो (Standing Orders) के अनुसार भुगतान करना।
- ग्राहकों को पूँजी निवेश आदि के बारे में परामर्श देना।
- ग्राहकों की मूल्यवान वस्तुओं को लाकर्स (Lockers) में सुरक्षित रखना।
- ग्राहकों की आर्थिक–स्थिति आदि के बारे में सन्दर्भ (References) देना।
- यात्री चैक (Travellers Cheques) तथा साख–पत्र (Letters of Credit) की सुविधाएँ प्रदान करना।
- उपभोक्ता साख (Consumer Credit) उपलब्ध कराना।
- विदेशी विनिमय की व्यवस्था करना।
- सरकार के लिए महत्व (Importance to Government) :– बैंक सरकार को भी अत्यन्त महत्वपूर्ण सेवायें उपलब्ध कराते हैं। केन्द्रीय बैंक सरकार के बैंकर (Banker to the Govt-) के रूप में कार्य करता है। सार्वजनिक आय (Income), व्यय तथा ऋण (Public Debt) सम्बन्धी

समस्त सरकारी व्यवहार बैंकों के माध्यम से ही किए जाते है। सरकार की आर्थिक–नीतियों के निर्धारण एवं उनके कार्यान्वयन में बैंक विशेष रूप से देश का केन्द्रीय बैंक, सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

निष्कर्ष (Conclusion) :–

उपर्युक्त विवेचन बैंकों के बढते हुए महत्व पर प्रकाश डालता है। बैंकों के परम्परागत स्वरूप में भारी बदलाव आया है। वे दिन समाप्त हो गये जब बैंक मात्र जमाएँ स्वीकार करने वाली तथा ऋण देने वाली, बडे शहरों एवं व्यापारिक केन्द्रों में, न्यूनतम जोखिम पर अधिकतम लाभ की भावना से प्रेरित होकर कार्य करने वाली संस्थायें थीं। हमारे देश में, विशेष कर स्टेट बैंक की स्थापना तथा 1969 में 14 प्रमुख व्यापारिक बैंकों के राष्ट्रीयकरण के पश्चात् न केवल बैंकों के भौगोलिक एवं कार्यात्मक क्षितिज (Geographical and Functional Horizon) ही विस्तार हुआ है वरन् उनके सम्बन्ध में क्रान्तिकारी अवधारणात्मक (Conceptual) परिवर्तन हुए हैं। बैंक अब देश के आर्थिक विकास के उत्प्रेरक के साथ–साथ सामाजिक परिवर्तन (Social Change) के महत्वपूर्ण माध्यम बन गये हैं।

बैंकों की भूमिका के सम्बन्ध में एक नई सोच एवं मनोविज्ञान का जन्म हुआ है। अब बैंक बड़े उद्योगपतियों एवं बड़े व्यापारियों का हित–पोषण करने वाली शहरी वित्तीय संस्थाएँ नहीं रह गये हैं। पिछले वर्षो में व्यापारिक बैंकों ने तेजी के साथ शाखा विस्तार कार्यक्रम चलाया है तथा बैंक ऐसे सुदूर ग्रामीण अंचलों एवं पिछड़े क्षेत्रों में भी पहुँच गये हैं, जहाँ पहले उनके होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

आज बैंकों के हितग्राही केवल बड़े उद्योगपति या व्यापारी ही नहीं हैं। बैंकों ने छोटे–छोटे व्यापारियों, बेरोजगार युवकों, छोटी–छोटी औद्योगिक व्यापारिक इकाइयों, बुनकरों, कारीगरों, शारीरिक रूप से अपंग व्यक्तियों, छोटे–छोटे कृषकों आदि के लिए भी अपने दरवाजे खोल दिये हैं।

सन्दर्भ गन्थ सूची :–

1.भारतीय स्टेटेट बैंकं वार्षिक प्रतिवेदन 2020
2.बीबीसी हिन्दी. जून 2019
3. www.google.com/wikipedia.com
4. www.wikipedia.com
5. www.sbi.co.in